Vol 5 Issue 11 August 2016

ISSN No : 2249-894X

Monthly Multidisciplinary Research Journal

Review Of Research Journal

Chief Editors

Ashok Yakkaldevi
A R Burla College, India

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies,
Sri Lanka

Welcome to Review Of Research

RNI MAHMUL/2011/38595 **ISSN No.2249-894X**

Review Of Research Journal is a multidisciplinary research journal, published monthly in English, Hindi & Marathi Language. All research papers submitted to the journal will be double - blind peer reviewed referred by members of the editorial Board readers will include investigator in universities, research institutes government and industry with research interest in the general subjects.

Regional Editor

Dr. T. Manichander
Ph.d Research Scholar, Faculty of Education IASE, Osmania University, Hyderabad.

Advisory Board

Kamani Perera
Regional Centre For Strategic Studies, Sri Lanka

Ecaterina Patrascu
Spiru Haret University, Bucharest

Fabricio Moraes de AlmeidaFederal
University of Rondonia, Brazil

Anna Maria Constantinovici
AL. I. Cuza University, Romania

Romona Mihaila
Spiru Haret University, Romania

Delia Serbescu
Spiru Haret University, Bucharest, Romania

Xiaohua Yang
University of San Francisco, San Francisco

Karina Xavier
Massachusetts Institute of Technology (MIT), USA

May Hongmei Gao
Kennesaw State University, USA

Marc Fetscherin
Rollins College, USA

Liu Chen
Beijing Foreign Studies University, China

Mabel Miao
Center for China and Globalization, China

Ruth Wolf
University Walla, Israel

Jie Hao
University of Sydney, Australia

Pei-Shan Kao Andrea
University of Essex, United Kingdom

Loredana Bosca
Spiru Haret University, Romania

Ilie Pintea
Spiru Haret University, Romania

Mahdi Moharrampour
Islamic Azad University buinzahra Branch, Qazvin, Iran

Titus Pop
PhD, Partium Christian University, Oradea,
Romania

J. K. VIJAYAKUMAR
King Abdullah University of Science & Technology,Saudi Arabia.

George - Calin SERITAN
Postdoctoral Researcher
Faculty of Philosophy and Socio-Political Sciences
Al. I. Cuza University, Iasi

REZA KAFIPOUR
Shiraz University of Medical Sciences
Shiraz, Iran

Rajendra Shendge
Director, B.C.U.D. Solapur University, Solapur

Nimita Khanna
Director, Isara Institute of Management, New Delhi

Salve R. N.
Department of Sociology, Shivaji University, Kolhapur

P. Malyadri
Government Degree College, Tandur, A.P.

S. D. Sindkhedkar
PSGVP Mandal's Arts, Science and Commerce College, Shahada [M.S.]

Anurag Misra
DBS College, Kanpur

C. D. Balaji
Panimalar Engineering College, Chennai

Bhavana vivek patole
PhD, Elphinstone college mumbai-32

Awadhesh Kumar Shirotriya
Secretary, Play India Play (Trust),Meerut (U.P.)

Govind P. Shinde
Bharati Vidyapeeth School of Distance Education Center, Navi Mumbai

Sonal Singh
Vikram University, Ujjain

Jayashree Patil-Dake
MBA Department of Badruka College Commerce and Arts Post Graduate Centre (BCCAPGC),Kachiguda, Hyderabad

Maj. Dr. S. Bakhtiar Choudhary
Director,Hyderabad AP India.

AR. SARAVANAKUMARALAGAPPA UNIVERSITY, KARAIKUDI,TN

V.MAHALAKSHMI
Dean, Panimalar Engineering College

S.KANNAN
Ph.D , Annamalai University

Kanwar Dinesh Singh
Dept.English, Government Postgraduate College , solan

More.....

ISSN: 2249-894X Impact Factor : 3.1402(UIF) Volume - 5 | Issue - 11 | August - 2016

Review Of Research

गाँधी दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विकास

तेजराम सिंह
शोध छात्र, राजनीतिक विज्ञान विभाग, हे.न.ब.ग.वि.वि. श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

सारांश

आधुनिक समाज विकास की जिस नीति पर चल रहा है। वह एक आयामी है अर्थात वह ढ़ाँचागत या आर्थिक है वह बहुआयामी विकास नहीं है। विकास से तात्पर्य आर्थिक विकास या आर्थिक विकास दर नहीं है। तकनीकी पर आधारित पाश्चात्य विकास मॉडल से केवल आर्थिक विकास हो रहा है। इस विकास प्रक्रिया में आर्थिकी, तकनीकीकरण, शहरीकरण, भूमण्डलीकरण प्रमुख तत्व है। यह विकास मॉडल धन–केन्द्रित है जबकि गाँधीय विकास की धारणा में नैतिक मूल्यों एवं तकनीकी दोनो का महत्व है। गाँधी ने आर्थिक एवं तकनीकि विकास के साथ–साथ ग्रामीकरण, विकेन्द्रीकरण, स्वावलम्बन, स्वदेशी, सहकारिता एवं शारीरिक श्रम पर जोर दिया है। ग्रामीकरण से तात्पर्य ग्रामोन्मुख एवं अहिंसक विकास से है। इस तरह गाँधी चितंन में गाँव को 'लघुविश्व' समझा गया है। गाँधी का 'सर्वोदय विकास मॉडल' मानव एवं पर्यावरण केन्द्रित है। यह सन्तुलित एवं सुस्थिर विकास की अवधारणा है।

बीज शब्द– सर्वोदय, तकनीकी, शारीरिक श्रम, पर्यावरण और नैतिकता, समग्र विकास ।

प्रस्तावना :

समग्र विकास सम्बन्धी गाँधी चिंतन को 'सर्वोदय' कहते हैं। सर्वोदय शब्द 'सर्व' और 'उदय' इन दो शब्दों के योग से बना है। 'सर्व' का अर्थ है– 'सब' और 'उदय' का अर्थ है– 'विकास'। तदनुसार, 'सर्वोदय' शब्द के मुख्यतः तीन अर्थ हैं– 'सबों का उदय', 'सब प्रकार से उदय' और 'सबों के द्वारा उदय' यहाँ 'सबों के उदय' का अर्थ है– सभी मनुष्यों, जीव–जन्तुओं एवं चराचर जगत का विकास। 'सब प्रकार से उदय' का अर्थ है– शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं सामाजिक सभी दृष्टियों से विकास और 'सबों के द्वारा' 'उदय' का अर्थ है– उदय या विकास में सबों की भागीदारी।

गाँधी के सर्वोदय या समग्र विकास सम्बन्धी चिंतन पर भारतीय सभ्यता और संस्कृति का गहरा प्रभाव पड़ा है। हजारों वर्ष पूर्व भारतीय ऋषि–मुनियों ने 'वसुधैव कुटुम्बकम्' और 'सर्वे भवन्तु सुखिनः' आदि उदगारों में सर्वोदय की भावना को व्यक्त किया है। भगवद्गीता का 'एकत्व' और बौद्ध दर्शन के संघ एवं जैन दर्शन के 'अनेकांतवाद' में सर्वोदय की झलक है। गाँधी ईसाई धर्म की प्रेम और सेवा तथा इस्लाम की समानता एवं भाईचारा के आदर्शों से प्रभावित थे। इन सब के अलावा गाँधी पर टालस्टॉय (द किंगडम ऑफ गॉड इज विदिन यू), थॉरो (सिविल डिस्ओविडियंस), रस्किन (अन टू दि लास्ट) का काफी प्रभाव पड़ा है। एक तरह से 'अंत्योदय' पुस्तक ही सर्वोदय की प्रेरणा का मुख्य आधार है।[1]

सर्वोदय का आधार गाँधी का ईश्वर और आत्मा सम्बन्धी विश्वास हैं। गाँधी कहते हैं। ''जिस प्रकार एक ही सूर्य ही किरणें समस्त विश्व में व्याप्त है, उसी प्रकर एक ही ईश्वर का अंश सभी मनुष्यों, जीव, जन्तुओं, पेड़–पौधों आदि में मौजूद हैं। इसलिए मौलिक रूप से परस्पर अंतर नहीं है।'' ऐसी स्थिति में कुछ लोगों का उदय या विकास हमारा लक्ष्य नहीं होना चाहिए। गाँधी साध्य और साधन की पवित्रता के पक्षधर थे। उनकी दृष्टि में सर्वोदय एक पवित्र साध्य है और इसकी प्राप्ति का पवित्र साधन है–सत्य और अहिंसा। गाँधी यह मानते थे कि अनुचित साधन से शुभ साध्य की प्राप्ति नहीं हो सकती हैं। सत्य एवं अहिंसा के अलावा अन्य एकादश व्रत, यथा–अस्तेय, अपरिग्रह, ब्रह्मचर्य, अभय, अस्वाद, अस्पृश्यता निवारण, शारीरिक श्रम, सर्वधर्म समभाव और स्वदेश की भावना भी सर्वोदय की प्राप्ति में आवश्यक है।[2]

गाँधी का सर्वोदय समाज ही संपोष्य समाज हैं सर्वोदय की व्याख्या करते हुए गाँधीवाद के प्रबल समर्थक श्री सिद्धराज ढ़ड्डा ने उसे 'वैकल्पिक समाज रचना' कहा है। उनके अनुसार सर्वोदय कोई विचारधारा नहीं है। इसी प्रकार सर्वोदय दर्शन के प्रणेता दादा धर्माधिकारी ने सर्वोदय की परिभाषा एक समाज रचना के अर्थ में की है और कहा है कि ''सर्वोदय ऐसे वर्णविहीन, जातिविहीन, तथा शोषण मुक्त समाज की स्थापना करना चाहता है। जिसमें प्रत्येक व्यक्ति और समूह के अपने सर्वांगीण विकास के साधन तथा अवसर प्राप्त रहेंगे।'' गाँधी का यह सर्वोदय अर्थात् सर्वोदयी समाज और कुछ नहीं संपोष्य समाज (Sustainable Society) है। इसी को 'यूनाइटेड नेशनस डेवलपमेन्ट प्रोग्राम' (U.N.D.P) ने संपोष्य मानव विकास (Sustainable Human Develop ment) की संज्ञा दी हैं। 'ह्यूमन डेवलपमेन्ट रिपोर्ट' (HDR) 1993 में 'संपोष्य मानव विकास की परिभाषा यह कह कर दी गई है कि ''मानव विकास लोगों का विकास है लोगों के लिए हैं (व्यापक और निष्पक्ष वितरण) और लोगों द्वारा है (सभी को सहभागिता का

अवसर देना)''[3] गाँधी और यू0एन0डी0पी0 दोनों की परिभाषाओं में जिस समाज की रचना के विषय में कहा गया है। वह 'सर्व' के विकास की और समाज में रहने वाले मानव के विकास की बात है। दोनों की यदि तुलना की जाए तो यह भी स्पष्ट होता है कि दोनों ने ही मानव को प्रधानता दी है। दोनों का मानना है विकास मनुष्य के लिए है न कि मनुष्य विकास के लिए है। गाँधी स्वीकार करते हैं कि यंत्र सब मनुष्यों का भला नहीं कर सकते हैं। मानव श्रम से ही सब का विकास होता है। अतः सर्वोदय, पूँजीवाद तथा साम्यवाद के बीच का मार्ग है।''[4]

'मानव विकास रिपोर्ट', 1993 (HDR) के अनुसार मानव विकास की बात इस प्रकार स्पष्ट की गई है–''विकास लोगों के लिए हो, न कि लोग विकास के लिए हों और विकास व्यक्ति को शक्ति प्रदान करें न कि उसे (व्यक्ति को) शक्तिहीन करें।''[5] गाँधी तथा यू0एन0डी0पी0 की रिपोर्ट में अन्य समानतायें भी पायी जाती हैं। दोनों ही सहकारिता को महत्व देते हैं। समाज कल्याण के लिए दोनों ही लघु समूह और उसकी क्रिया पर जोर देते हैं। लघु रूप में कार्य का समर्थन दोनों करते हैं। विकेन्द्रीकरण तथा रोजगार पर दोनों का जोर है।

गाँधी सर्वोदय समाज या संपोष्य समाज की रचना का समर्थन करते हैं और इस प्रकार उनके विकास की अवधारणा आधुनिक औद्योगिक सामाजिक विकास की अवधारणा से कई रूपों और अर्थों में विरोधपूर्ण है। आधुनिक औद्योगिक सामाजिक विचार व्यक्ति की आवश्यकताओं में वृद्धि करता है और वह मनुष्य तथा प्रकृति और मनुष्य तथा समाज में अलगाव ही नहीं करता वरन् मनुष्य के भीतर भी अलगाव उत्पन्न करता है। आधुनिक विकास के कारण मनुष्य भीतर से दो भागों में बँटा है–प्रथम आध्यात्मिकता और द्वितीय–भौतिकता में। इनमें आध्यात्मिकता को तो एक किनारे कर दिया गया है और यहाँ तक कि उसे भुला दिया गया है। आर्थिक लक्ष्य को सर्वोपरि स्थान दिया जा रहा है और धन संग्रह स्वेच्छाचारी आन्दोलन बन गया है। इस आन्दोलन का विनाशकारी परिणाम यह हुआ है कि नैतिकता का ह्रास हुआ है। सामाजिक सहानुभूति में कमी और सामाजिक अलगाव में वृद्धि हुई है। यही कारण है कि गाँधी ने औद्योगिक सभ्यता की भर्त्सना की है, क्योंकि इससे भौतिक विकास होता है आत्मिक नहीं। केवल आर्थिक विकास दर संपोष्य विकास का मानक नहीं है।[6]

गाँधी आधुनिक सभ्यता की इस पाशविक वृत्ति में वृद्धि को देखकर कहते हैं कि मनुष्य को इन पाशविक वृत्तियों से बचना चाहिये और अपने ही कर्मों के दुष्परिणामों से अपनी रक्षा करने के लिए एक भिन्न प्रकार की विकास की अवधारणा 'सर्वोदय' की है। इस 'सर्वोदय' की निम्नलिखित विशेषतायें है–

1.भारतीय संस्कृति में 'सबे भूमि गोपाल की' या 'सम्पत्ति सब रघुपति के ऐही' का आदर्श रहा है। गाँधी के समग्र विकास के सिद्धान्त में इसकी केन्द्रीय भूमिका है। उन्होंने अपने सर्वोदय सिद्धान्त में रस्किन की पुस्तक 'अंटू द लास्ट' के उस सूत्र को प्रमुखता दी है, जिसमें यह कहा गया है– 'व्यष्टि का शुभ समष्टि के शुभ में निहित है। इसका अर्थ है कि समाज के हित में ही व्यक्ति का हित निहित है।''[7]

2.गाँधी का मानना था कि मानसिक श्रम की तुलना में शारीरिक श्रम को हेय दृष्टि से देखने के कारण भी समाज में भेदभाव एवं असमानता को बढ़ावा मिला है। इसलिए उन्होंने शारीरिक श्रम को प्रतिष्ठित करते हुए इसे अपने एकादश व्रत में शामिल किया। गाँधी के अनुसार, 'एक वकील और नाई तथा एक कृषक और श्रमिक के कार्यों का समान मूल्य है।[8]

3.गाँधी अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'हिन्द स्वराज' में मशीनों की हद बाँधने की बात करते हैं। उनका मानना है कि यंत्रों के कारण प्रकृति का अनुचित दोहन होता है और मानवीय श्रम की अवहेलना होती है। मशीनीकरण से मनुष्य का शोषण बढ़ता है। इसीलिए हमें हस्तचलित यंत्रों और लघु एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा देना चाहिए।

4.विकास के पश्चिमी माडॅल से विषमता की खाई दिन –प्रतिदिन गहरी एवं चौड़ी होती चली जा रही है। असमान विकास के कारण ही नक्सलवाद, आतंकवाद और वैमनस्य पनप रहा है। जबकि इसके विपरीत समग्र विकास की गाँधीय परिकल्पना में समानता एवं सौहार्द के लिये जमीन तैयार की गई है। गाँधी दृष्टि में विकास ग्रामोन्मुख हैं।

5.गाँधी का सर्वोदय चिंतन आध्यात्मिक जीवन को प्रोत्साहित करता है। सर्वोदय समाज में व्यक्ति का धर्म होगा करूणा, अहिंसा और सेवा। उपासना दरिद्रनारायण की होगी। मानवता की पूजा होगी। अनेक धर्म नहीं, धर्मों में समभाव होगा। भौतिकता और आध्यात्मिकता का समन्वय होगा। मानव की सेवा वास्तविक धर्म होगा।

6.गाँधी के समग्र विकास की परिकल्पना में समाज की उन्नति के लिए व्यक्ति की उन्नति और व्यक्ति की उन्नति के लिए समाज की उन्नति आवश्यक है। व्यक्ति के सामाजिक, नैतिक, शारीरिक और बौद्धिक गुणों का विकास किसी समाज के विकसित होने का लक्षण है। समाज का निर्माण और उसका प्रमुख कार्य है व्यक्ति का समुचित विकास करना।

7.सर्वोदय समाज में व्यक्ति के विकास के लिए एक अन्य महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि व्यक्ति को अपने आत्मनिर्माण की स्वतन्त्रता है। वह अपना विकास अपने बल पर करेगा। वह अन्य पर निर्भर नहीं होगा। वह स्वराज का निर्माण करेगा। वह आत्म–परीक्षण करेगा। व्यक्ति स्वशासित होगा। व्यक्ति के विकास का मानदण्ड यह होगा कि वह समाज में सेवा के लिए कितना तत्पर रहता है। समर्पण की भावना से दूसरों के हितों के लिए कार्य करना उसके आत्मविश्वास का मानदण्ड होगा। ऐसे विकसित समाज में छोटे–बड़े का भाव नहीं होगा। व्यक्ति त्याग, अपरिग्रह की भावना और अहिंसा के व्रत से अपने जीवन का विकास करेगा। विकास की चरम परिणति अहिंसा के द्वारा सत्य की प्राप्ति होगी। व्यक्ति का विकास ही गाँधी का प्रमुख लक्ष्य था।

8.व्यक्ति के विकास के लिए राज्य–व्यवस्था का संपोषी होना आवश्यक है। यह राजनीतिक संपोष्यता तभी संभव है जब राज्य की सत्ता का विकेन्द्रीकरण हो। उसमें संघर्ष नहीं सहयोग हो। हिंसा नहीं, अहिंसा हो। बहुमत नहीं, आम सहमति हो। गाँधी दर्शन में ''स्वराज वह स्थिति है जिसमें कोई भी किसी के ऊपर सत्ता या शक्ति का प्रयोग नहीं करता। ''वर्तमान राज्य हिंसक है, क्योंकि वह व्यक्ति से अपने प्रति निष्ठा चाहता है। सर्वोदय इस राजनीति के स्थान पर लोकनीति को चाहता है। लोकनीति शक्ति की राजनीति नहीं है। यह जनता की राजनीति है।

9.सर्वोदय अर्थात् समग्र विकास में अन्तर्राष्ट्रीयवाद और मानववाद का समर्थन किया जाता है।

10.गाँधी ऐसा विकास चाहते थे जिसमें प्रकृति को कोई नुकसान न हो। यह लालच की पूर्ति नहीं कर सकती, उनका मानना था कि 'स्वास्थ्य ही सच्ची सम्पत्ति है न कि सोने, चाँदी के टुकडे।''[12]

विकास, पर्यावरण और नैतिकता– आधुनिक मानव समाज विज्ञान और तकनीकी से सुसज्जित समाज है। तकनीकी से विकास के अनेक

आयाम खुले हुए हैं। तकनीकी से पर्यावरण प्रभावित हुआ है और पर्यावरण से तकनीकी में परिवर्तन आया है। जहाँ तक पर्यावरण की सुरक्षा की बात है पर्यावरण की सुरक्षा राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक विकास का एक महत्वपूर्ण पहलू है। विकास की प्रक्रिया में पर्यावरण के लिए प्रस्तुत की गई चुनौतियों का सामना करना आवश्यक है। इसके लिए तकनीकी का विकास होना भी स्वाभाविक है।

पर्यावरण की सुरक्षा में कभी–कभी तकनीकी से सहायता भी मिलती है, परन्तु दूसरी ओर देखा जाता है कि तकनीकी ने स्वस्थ पर्यावरण को अस्वस्थ भी किया है। यहीं से मनुष्य का नैतिक कर्तव्य प्रारम्भ हो जाता है कि वह पर्यावरण की सुरक्षा करे। जो आज की पीढ़ी के लिये शुभ है। वह भविष्य में आने वाली पीढी के लिये बहुत अशुभ हो सकता है। विकास के साधन के लिये गाँधी ने अहिसांवादी नीति का मार्ग प्रस्तुत किया है। जो आधुनिक तकनीकि समस्याओं का समाधान कर सकता है। तकनीकि मनुष्य के लिए हैं न कि मनुष्य तकनीकी के लिए है। इस प्रकार देखा जाय तो गाँधी दर्शन की आवश्यकता अपेक्षाकृत पहले से अधिक है। वे सादा जीवन उच्च विचार को सबके विकास के लिए आवश्यक मानते थे। विकास और तकनीकि जो वर्तमान समय की आवश्यकता है, इसके लिए नैतिकता की अत्यधिक आवश्यकता है। इसके अभाव में जो भी इनके द्वारा विकास होगा, वह स्थायी या संपोषि नहीं होगा।[13] इसलिए गाँधी दर्शन के परिप्रेक्ष्य में विकास करना अपरिहार्य हो जाता है।

निष्कर्ष–

आधुनिक विकास के साथ आज मनुष्य पहले से ज्यादा अविकसित,असहाय एवं अस्वस्थ है। आधुनिक युग में तकनीकि विकास होते हुए भी गरीबी, भुखमरी, बेरोजगारी , विषमता,हिंसा तथा पर्यावरण–असंतुलन मानवता के लिए खतरा बनकर हमारे सामने है। जबकी गाँधी का सर्वोदय दर्शन संपोषी विकास की धारणा है, जिसका 'सर्वभूत हिताय' लक्ष्य एवं कार्य है। गाँधी का सर्वोदय चिंतन सामाजिक न्याय एवं समग्रविकास की पृष्ठभूमि है, जिसमें सर्म्पूण मानवता एवं जैवविविधता की चिंता है। गाँधी दृष्टि से विकास करने में मनुष्य एवं मनुष्येत्तर दोनो का विकास सम्भव है, साथ ही इस मार्ग से विश्व में उभरती सामाजिक एवं पर्यावरण समस्याओं का समाधान किया जा सकता है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.गाँधी एम0के0, सर्वोदय (रस्किन के 'अंटू दिस लास्ट' का सार), सस्ता साहित्य मण्डल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1968, पृष्ठ–5
2.सिंह रामजी, गाँधी दर्शन मीमांसा, हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, पटना बिहार, 1973, पृष्ठ–59
3.मिश्र हृदयनारायण, सामाजिक–राजनैतिक दर्शन के नये आयाम, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001, पृष्ठ–325
4.गाँधी, विचार–जून 1996, राजघाट वाराणसी, पृष्ठ–16
5.मानव विकास रिपोर्ट, 1993
6.राय रामेश्वर, अन्डर–स्टैन्डिंग गाँधी, पृष्ठ–58
7.धर्माधिकारी दादा, सर्वोदय–दर्शन, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी (उत्तर प्रदेश), 1983, पृष्ठ–3
8.वही, पृष्ठ–3
9.गाँधी एम0के0, हिन्द स्वराज, अनुवादक–अमृतलाल, ठाकोरदास नाणावटी, सर्व सेवा संघ प्रकाशन, वाराणसी (उत्तर प्रदेश), 2009, पृष्ठ–93, 94, 95, 96, 97.
10.मिश्र हृदयनारायण, सामाजिक–राजनैतिक दर्शन के नये आयाम, शेखर प्रकाशन, इलाहाबाद, 2001, पृष्ठ–325, 326
11.वही, पृष्ठ–324, 328
12.वही, पृष्ठ–329, 330
13.पाण्डेय संगमलाल, वैदान्तिक सोशल फिलोसफी दर्शन पीठ, इलाहाबाद, 1988, पृष्ठ–13, 14

तेजराम सिंह
शोध छात्र , राजनीतिक विज्ञान विभाग , हे.न.ब.ग.वि.वि.श्रीनगर गढ़वाल, उत्तराखण्ड।

Publish Research Article
International Level Multidisciplinary Research Journal
For All Subjects

Dear Sir/Mam,

We invite unpublished Research Paper,Summary of Research Project,Theses,Books and Books Review for publication,you will be pleased to know that our journals are

Associated and Indexed,India

- Directory Of Research Journal Indexing
- International Scientific Journal Consortium Scientific
- OPEN J-GATE

Associated and Indexed,USA

- DOAJ
- EBSCO
- Crossref DOI
- Index Copernicus
- Publication Index
- Academic Journal Database
- Contemporary Research Index
- Academic Paper Databse
- Digital Journals Database
- Current Index to Scholarly Journals
- Elite Scientific Journal Archive
- Directory Of Academic Resources
- Scholar Journal Index
- Recent Science Index
- Scientific Resources Database

Review Of Research Journal
258/34 Raviwar Peth Solapur-413005,Maharashtra
Contact-9595359435
E-Mail-ayisrj@yahoo.in/ayisrj2011@gmail.com
Website : www.ror.isrj.org